‘Research Journey’ International Multidisciplinary E- Research Journal
Special Issue I– Emerging Trends & Issues in Research & Development
Global Impact Factor – 0.565 (2014) & 0.676 (2015)
ISSN : 2348-7143 (Online)
Jan-March- 2016

दलित साहित्य में शोध के आधुनातन आयाम

वानखेडे गजानन सुरेश
शोध छात्र, उमवि, जलगांव
महाराष्ट्र, भारत.

"एक टहनी एक दिन पतवार बनती है
एक चिंगारी दहक, अंगार बनती है
जो सदा रौंदी गई मिट्टी समझकर
एक दिन, मिट्टी वही मीनार बनती है।"

पृष्ठभूमि:-*हिंदी में दलित, स्त्री, आदिवासी इन विमर्शो की बडी चर्चा है। यह विमर्श हिंदी साहित्य के आधुनातन आयाम है। इसके पीछे मुख्य कारण है कि यह अपनी अस्मिता के लिए लिखा गया साहित्य है। इनमें सबसे कारगल एवं प्रभावशाली विमर्श है दलित विमर्श है। दलित साहित्य की शुरुआत महाराष्ट्र से होकर संपूर्ण भारत में उसका विस्तार हुआ। सही माईने में हिंदी में दलित साहित्य की शुरुआत १९९० के आस-पास मानी जाती है। दलित साहित्य को लेकर काफी बहस होती है, एक पक्ष है दलित साहित्यिकारों का है तो दूसरा गैर दलित साहित्यकार है। दलित साहित्य वहीं लिख सकता है जो दलित है क्योंकि दलित साहित्य अनुभूति का नहीं स्वनुभूति का साहित्य है। ऐसा दलित आलोचक मानते हैं। भारतीय समाज में जो चतुर्थ वर्ण व्यवस्था परंपरा से चली आ रही है उसमें शुद्र या चतुर्थ श्रेणी में जो लोग है वह दलित है। दलितों के लिए शुद्र, अपने अधिकारों से वंचित, दमन किया हुआ, मीटाया हुआ, दबाया हुआ, मसला हुआ, शोषित, सताया हुआ, हतोत्साहित, कुचला हुआ, हरिजन आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। दलित साहित्य के वैचारिक केंद्र में मा. जोतिबा फुले एवं आंबेडकर का प्रभाव रहा है। दलित साहित्य का केंद्रीय सरोकार ज्ञान एवं सत्ता है, दूसरा आत्मसम्मान 'Self dignity' रहे हैं। भारतीय समाज में दलितों को मनुष्य होने के नाते जो सम्मान मिलना चाहिए था वह नहीं मिला। सत्ता के हिस्सेदारी से दलितों को वंचित रखा गया। वैसेही दलितों को जमीन के हक्क से दूर रखा गया। दलित ज्ञान की परंपरा से जुडने के आकांक्षी है। जिसके पास ज्ञान एवं सत्ता यह दोनों चिजे होती है वहीं मनुष्य ताकद वर होता है। दलितों को पंरपरा से इन बातों से दूर रखा गया। भारतीय समाज व्यवस्था ने दलितों को कभी भी विवेकशील विचारों से समझने की चेष्टा नहीं की। दलित लेखक बार-बार इन्हीं सवालों से टकराता है। इस आलेख के माध्यम से मैंने दलित साहित्य में शोध की कौन-कौनसी सभावनाएँ है इसपर प्रकाश डालने की कोशिश की है।*

दलित शब्द की व्याख्या:-

बाबूराव बागूल :- "मनुष्य की मुक्ति को स्वीकार करनेवाला, वंश, वर्ण और जाति श्रेष्ठत्व का प्रबल विरोध करनेवाला साहित्य ही दलित साहित्य है।" [१]

कंवल भारती :- "दलित वह है जिस पर अस्पृश्यता का नियम लागू किया गया है। जिसे कठोर और गन्दे कार्य करने के लिए बाध्य किया गया है। जिसे शिक्षा ग्रहण करने और स्वतन्त्र व्यवसाय करने से मना किया और जिस पर सछूतों ने सामाजिक निर्योग्यताओं की संहिता लागू की वही और वही दलित है,और इसके अन्तर्गत वही जातियाँ आती हैं,जिन्हें अनुसूचित जातियाँ कहा है।"[२]

डॉ. शरण कुमार लिंबाले :-अपनी किताब 'दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र' में लिखते हैं, "दलित साहित्य अर्थात दलित लेखकों द्वारा दलित चेतना से दलितों के विषय में किया गया लेखन। उसका लक्ष्य है दलित समाज को गुलामी से अवगत करना, उसे इस गुलामी के विरूध्द संघर्ष करने के लिए प्रेरित करना और सवर्ण समाज के समक्ष अपनी व्यथा और वेदनाओं का बयान करना।"[३]

डॉ.श्यौराज सिंह बेचैन:- "दलित साहित्य उन अछूतों का साहित्य है जिन्हें सामजिक स्तर पर सम्मान नहीं मिला। सामाजिक स्तर पर जातिभेद के जो लोग शिकार हुए हैं, उनकी छट्पटाहट् ही शब्दबध्द होकर दलित साहित्य बन रही है।" [४]

दलित साहित्य को समझने से पहले उसकी वैचारिक पृष्ठभूमि पर विचार करना आवश्यक है।

दलित साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि :-

१. **बौध्द तत्वज्ञान:-** बुध्द के उदय के बाद सामाजिक स्थितियों में परिवर्तन हुआ। आमतौर पर स्वार्थ अंधता के कारण हम चिजों का संग्रह करने और उन्हें बचाने के लिए जुट जाते हैं। बौध्द तत्वज्ञान इसी संग्रह वृत्ति का विरोध करता है। संग्रहवत्ति से बचने के लिए कहता है। आत्मसम्मान की ज्योति जगाए रखने की बात ही बौध्द तत्वज्ञान में कही गयी है। इसका प्रभाव दलित साहित्य पर है।

२. **मनुस्मृति का विरोध:-** मनुस्मृति जो जातिय व्यवस्था को बनाए रखती है। उस का विरोध दलित साहित्य में किया गया है उदा. ब्राम्हण - ज्ञान देने का कार्य करेगा, क्षेत्रिय-रक्षा का, वैश्य -पशुपालन या व्यापार का, शुद्र -सेवा करने का काम करेंगे आदि व्यवस्था का विरोध दलित साहित्य में हुआ है। जन्म से कोई शुद्र नहीं होता और कोई ब्राम्हण नहीं होता कर्म से ही ब्राम्हण होता है या दलित होता है। इस संदर्भ में डॉ. सुर्यनारायण रणसुभे लिखते हैं, "इसमें कोई संदेह नहीं कि अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार-प्रसार के साथ यहाँ की पारंपारिक समाज-व्यवस्था चरमराने लगी। तब से लेकर आज तक इस देश में दो प्रकार की विचारधाराएँ पूरी शक्ति के साथ सक्रिय है। एक विचारधारा जो मनुस्मृति का प्रतिनिधित्व करती है, वह इस व्यवस्था को उसी रुप में बनाए रखना चाहती है और दुसरी विचारधारा जो बुध्द, कबीर और आंबेडकर का प्रतिनिधित्व करती है, नई समताधिष्ठित समाज रचना का निर्माण करना चाहती है।"[५] दलित साहित्यिक एवं विचारको का एक वर्ग मनुस्मृति के अमानवीय, शोषण शास्त्र को नकरता है।

३. **मा. जोतिबा फुले :-** सन् १८४८ में पुणे के बुधवार पेठ में लडकियों के लिए पहली पाठशाला खोली। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मा. जोतिबा फुले को अपना गुरु मानते हैं। मा. जोतिबा फुले एवं सावित्रीबाई फुले ने १८५२ में अस्पृश्य समाज की लड़कियों के लिए पाठशाला खोलकर दलितों के लिए शिक्षा के किवाड खुले किए। मा. जोतिबा फुले ने सन् १८७३ में 'गुलामगिरी' लिखकर दलित समाज का मार्गदर्शन किया। 'गुलामगिरी' यह ग्रंथ सामाजिक दस्तावेज है। जिसमें मा. फुले इन्होंने दलित साहित्य का केंद्रीय कथ्य 'ब्रम्हणवाद' के खिलाफ कलम चलाई । 'ब्राम्हणवाद' यानी एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य में भेद का भाव निर्माण करना है। 'ब्राम्हणवाद' यह एक व्यवस्था है जो वर्ण व्यवस्था का समर्थन करती है। ओर उसे बनाए रखने के लिए प्रयत्न करती है। ब्राम्हण एक आम आदमी है। लेकिन 'ब्राम्हणवाद' यह सही अर्थ में दलितों के दुर्दशा का कारण है। दलित साहित्य का संघर्ष 'ब्राम्हणवाद' से है। मा. फुले इन्होंने सही मायने में दलित साहित्य के क्रांति के बीजरोपन का कार्य किया। मा. जोतिबा फुले संपूर्ण व्यवस्था को नई पध्दति में बांधना चाहते थे। इस संदर्भ में डॉ सुर्यनारायण रणसुभे लिखते हैं, "मा. फुले ने ब्राम्हणेमरों को मंत्र दिया था ; उसी मंत्र से बाबा साहेब प्रेरित थे। फुले जी का मंत्र था,

ज्ञान के अभाव में बुध्दि गई,
बुध्दि के अभाव में नीति गई,
नीति के अभाव में गति गई,
सम्पत्ति के अभाव में शुद्र बर्बाद हो गए
केवल ज्ञान के अभाव में इतना अनर्थ हो गया।" [६]

४. **डॉ. बाबा साहब आंबेडकर के विचारों का प्रभाव:-** आधुनिक दलित साहित्य फुले के विचारों से प्रभावित है या आंबेडकर के विचारों से यह नई बहस दलित साहित्य में शुरु होती है। दलित साहित्यिक एवं आलोचको का मानना है, आंबेडकर या आंबेडकर के विचारों से प्रेरित साहित्य ही दलित साहित्य है। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आधुनिक भारत के बहुत बडे चिंतक है। इस संदर्भ में डॉ सुर्यनारायण रणसुभे लिखते हैं, "डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की जन्मभूमि तथा कर्मभूमि महाराष्ट्र में रही, उन्होंने अपने कार्यकर्ताओं को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में घुसकर पूरी लगन तथा निष्ठा के साथ खडे होने की प्रेरणा दी। बात केवल इतनी ही नहीं, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी ने सृजनात्मक तथा रचनात्मक क्षेत्र में कार्यकर्ताओं को प्रेरित किया।"[७] बाबासाहब आंबेडकर ने अपने शोषित, पीडित, दलित वर्ग को जगया उन्हें देखना, सुनना, बोलना सिखाया। स्वतंत्र भारत के संविधान में समता, स्वतंत्रता और सम्मान का अधिकार देकर उन्हें लढना सिखाया। आंबेडकर का मनना है, हिंदू समाज व्यवस्था में जो चार वर्ण है वह एक, चार मंज्जिला इमारत के जैसे है

ISSN : 2348-7143 (Online)
Jan-March- 2016

लेकिन इस इमारत में एक मंज्जिल से दूसरी मज्जिल तक जाने के लिए सिढियाँ नहीं है। यानी एक वर्ग से दूसरे वर्ग में जाने के लिए कोई रास्ता नहीं है। ओर आमतौर से यह माना जाता है कि जिस समाज में जितनी आवाजाही होगी वह समाज उतना ही प्रगतिशील होता जाता है। भारतीय समाज मे यह व्यवस्था नहीं है। इस संदर्भ में डॉ सुर्यनारायण रणसुभे लिखते हैं, "दलित साहित्य सृजन के मूल में डॉ. आंबेडकर जी की चिंतनधारा मुख्य रुप से काम कर रही है। डॉ. आंबेडकर दलित साहित्य के न केवल प्रेरणास्त्रोत है अपितु इस साहित्य का प्रस्थान बिंदु ही आंबेडकर जी की विचारधारा है।" [८]

५. **दलित आंदोलनः-** १९५६ में हिंदू समाज में कोई जगह न मिलने के कारण बाबासाहब आंबेडकर ने अपने ३ लाख ८० हजार समर्थो के साथ बौध्द धर्म में धर्मांतरण किया। इस संदर्भ में डॉ.सुर्यनारयण रणसुभे लिखते हैं कि, "यह सही है कि वर्ण और जाति व्यवस्था की क्रूरता के कारण ही यहाँ के दलितों ने आरंभ में इस्लाम तथा बाद में ईसाई धर्म को अपनाने के बाद रुक-सा जाता है। दलित साहित्य ने ऐसे धर्म को हमेशा नकारा है जो विषमता को शास्त्र के रुप में ग्रहण करता है, जो विषमता का समर्थन करता है, और ऐसे धर्म को स्वीकारा है, जिसने मनुष्य मात्र की दुहाई दी है, जिसने मनुष्य ओर मनुष्य में कभी अंतर नहीं किया।" [९] १९६० के बाद दलित आंदोलन की शुरुआत हुई जिसमें रिपब्लिकन आंदोलन, भूमिहीनों का सत्याग्रह, रिपब्लिकन का ऐक्य एवं विघटन, दलित पँथर, नामांतरण आंदोलन, मास मुव्हमेंट, दलित मुक्ति सेना, मंडल आयोग, रिडल्स प्रकरण, कांशीराम का बामसेफ संघटन आदि महत्वपूर्ण संगठन रहे हैं। इनका भी प्रभाव दलित साहित्य पर रहा है।

६. **भारतीय गाँवः-** भारतीय राजनीति में गाँव, जाति, जनजातियाँ केंद्र में रही है। जाति के बिना भारत को नहीं समझा जा सकता है। दलित साहित्य पर इसका वैचारिक प्रभाव दिखाई देता है। इन वैचारिक पक्ष को लेकर दलित साहित्य में शोध की अनेक संभावनाएँ है।

साहित्य की सभी प्राथमिक विधाओं में दलित साहित्य लिखा गया है। आत्मकथा, उपन्यास, कविता, कहानी, नाटक, आलोचना। संपूर्णतः विचार करे तो सृजनात्मक अभिव्यक्ति के मंच पर दलित साहित्य ने अपना अस्तित्व बडे ताकदवर तरीके से दर्ज किया है।

कविताः- कविता साहित्य की प्राथमिक विधा है। दलित कविता में ज्ञान एवं सत्ता केंद्रीय विषय रहे हैं। दलित कविता में अत्याचार, शोषण, छुआ-छूत, उच्च वर्गो द्वारा दलितों को हतोत्सहित करना आदि मुख्य विषय रहे हैं। हीरा डोम इनकी 'अछूत की शिकायत' यह हिंदी की पहली दलित कविता मानी जाती है। जिसमें पानी की प्राथमिक समस्या को उठाया गया हैं। जो सन १९१४ में 'सरस्वती' पत्रिका में छपी। दलित कवयित्रियों में मुख्यतः कौशल्य पवार, कुसुम मेघवाल, हेमलता महीश्वर, रजनी अनुरागी, नीरा परमार, सुशीला टाकभौर, पूनम तुषाम, कावेरी, विमल थोरात, अनिता भारती आदि ने लेखन किया है। वैसे ही लेखक को में स्वमी अछुतानंदन हरिहर, धर्मवीर, मोहनदास नैमिशराय, श्यौराज सिंह बेचैन, जयप्रकाश कर्दम, मलखनसिंह, मनशाराम, सघोष, एन. सिंह, दयानंद बटोही, रजत रानी मीनु, ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'ठाकुर का कुआं' कविता में सामाजिक सच्चाई की अभिव्यकित करती है। असंग घोष की 'मैं दूंगा माकूल जवाब' महत्वपूर्ण दलित कविता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि अपनी कविता 'आईना' में लिखते हैं,

वे पसंद नहीं करते जाति पर बात करना,
क्योंकि वे नहीं पासी, चमार, भंगी, महार
इसलिए कडी मसीकत ओर तू-तू, मैं-मैं के बाद
जुटाया है मैंने एक आईना। जिसमें उभरता है
बिंब जो उन्हें लगाता है विभत्स प्रतिरोध से भरा हुआ।

मलखनसिंह अपनी कविता 'सुनो ब्राम्हण' में दलितों की दुर्गति का कारण 'ब्राम्हणवादी' व्यवस्था को मानते हैं। इस कविता में लेखक ने 'ब्राम्हणवादी' व्यवस्था पर करारा प्रहार किया है। जयप्रकाश कर्दम द्वारा लिखित 'मुझसे जन की भाषा में बतीयाओ' भी महत्वपूर्ण है। इन सभी कविता के मुख्य स्वरों में दर्द की स्वानुभूति को अभिव्यक्ति करना, दलितों में संघर्ष

एवं प्रेरणा जागृत करता है, इनकी कविताओं के प्रेरणा स्थान बाबासाहेब आम्बेडकर है, इन्होंने वर्ण-जातिव्यवस्था को ध्वस्त करने के लिए कविताएँ लिखी। साथ ही कैसे भारतीय गांव दलितों के लिए दमन एवं शोषण के लिए पोषक रहे हैं इस पर प्रकाश डालते हुए व्यवस्था पर करारा व्यंग किया है। डॉ. अंबेडकर का मूल मंत्र है शिक्षित बनो, संघर्ष करो, संगठित रहो। इन सभी मुद्दो को केंद्र में रखकर कविता लिखी। दलित कविता में रंजकता नहीं होती है। दलित कविता यथार्थ का चित्रण करती है।

आत्मकथा:- आत्मकथा में लेखक कों ने अपने व्यक्तिगत जीवन के साथ दलित समाज के प्रति अपनी प्रतिबध्दता को लेखन का केंद्र बनाया। जिससे उच्चभू सामाज आज तक अनभिज्ञ था। उस समाज के लोगों तक अपने दलित बांधवों की पीड़ा को पहुँचाया है। जिसे पढ़ने के बाद आज भी दलित जीवन में सूर्योदय नहीं हुआ है, यह यथार्थ सामने आता है। आत्मकथाओं के केंद्र में दलितों की वेदना, अन्याय-अत्याचार, अस्पृश्यता, दारिद्रय, छुआ-छूत, वर्णव्यवस्था, पशुतूल्य, अमानवीय, नरकीय यातनाएँ, दलितों के प्रति निम्न भाव, अशिक्षा, दलित स्त्री का शोषण, पूँजीवादी व्यवस्था से ग्रस्त मजदूर, न्याय माँगने पर पुलिस द्वारा शोषित दलित समाज, घुमन्तू समाज की समस्या आदि का चित्रण प्रखरता से मिलता है। आज भी दलित समाज अशिक्षित होने के कारण या किसी कारण से शिक्षा न मिलने से, परंपरागत रीति रीवाज़, अंधविश्वास, व्यसनाधिनता आदि के कारण मुख्य धारा में नहीं आ सका है। यह आत्मकथाएँ केवल आक्रोश एवं विद्रोह का साहित्य नहीं बल्कि दलित समाज में सुर्योदय का अशावाद उत्पन्न करानेवाली है। अपने समाज का अस्तित्व एवं आत्मशोध कराने मे कफी हद तक सफल हुई दिखाई देती है। दलित आत्मकथा के संदर्भ में कालीचरण स्नेही 'पुस्तकवर्ता' इस पत्रिका में लिखते हैं, "अपनी आत्मकथाओं में दलित साहित्यकारों ने अपने जीवनानुभवों को इस तरह से खोला है कि सदियों से उपेक्षित दलित साहित्य आज एक बडा विमर्श बनकर समकालीन साहित्य के परिदृश्य पर उभरा है।"[१०]

हिंदी की पहली दलित आत्मकथा मोहनदास नैमिशराय की 'अपने अपने पिंजरे' भाग-१, २(२०००)मानी जाती है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'जूठन'(१९९७) इस आत्मकथा में भंगी समाज में जन्म लेने की नियति और भंगी होकर इस देश में जीने की त्रासद पिडा को बयान करती है।, सूरजपाल चौहन की 'तिरस्कृत' (२००२), 'संतप्त' (२००४)कौशल्या वैसंत्री की 'दोहरा अभिशाप' में नल के पानी की समस्या पर प्रकाश डाला है। वैसे ही गांव की सामाजिक संरचना, आर्थिक संसाधन क्या है? उसमें दलित समाज की हिस्सेदारी एवं उपस्थिति बिल्कुल नहीं है। पानी का सबसे बडा सवाल जो बाबासाहब आंबेडकर ने 'महाड' १९२७ में उठाया था। वह सिर्फ पानी मिलने का सवाल नहीं था ऐसा नहीं था कि वह पानी नहीं मिलता तो दलित मर जाते। यह लढाई आत्मसम्मान की थी। क्यों एक दलित पाणी नहीं ले सकता? सुशिला टाकभौरे की 'शिंकजे का दर्द' इस आत्मकथ के संदर्भ में प्रीति सागर 'पुस्तकवर्ता' इस पत्रिका में लिखति है, "दलित होने के कारण जीवन के हर क्षेत्र में जुझने, सम्मानजनक जीवन जीने के का अधिकार पाने की कोशिशें का विवरण तथा वैवाहिक जीवन में पति से प्राप्त पीडा और उसी पीडा में जिजीविषा तलाशने की कोशिश का शपथपत्र है।"[११] तुलसीराम की मुर्दहिया, मणिकर्णिका इसका दुसरा खंड है। श्यौराज सिंह बेचैन की 'बच्चपन मेरे कंधों पर' इस आत्मकथा में पिता की मौत से उत्पन्न पारिवारिक स्थिति और सौतेले पिता के व्यवहार से निष्कर्ष निकलता है कि यह आत्मकथा भारमीय समाज, खसकर दलित समाज के अंतर्विरोध की त्रासदी को मार्मिकता के साथ उजागर करती है।, माताप्रसाद की 'झोपडी से राजभवन तक', उमाशंकर आर्य की 'घुटन' भगवानदास की 'मैं भंगी हूँ '१९८१, रुपनारायाण सोनकर 'नागफनी' २००५, डॉ.धर्मवीर की 'मेरी पत्नी और भेडिया' २००९ शरण कुमार लिम्बाले की 'अक्करमाशी', लक्ष्मण गायकवाड की 'उचक्का' आदि महत्वपूर्ण है। इन आत्मकथाओं का केंद्रिय कथ्य अपने समाज का अनुभव एवं दलित होने का अनुभव की अभिव्यक्ति है। उदा. राख ही जनती हे अपने जलने की पिडा, एक तरह से जलती है और राख में तबदिल हो जाती है।

उपन्यास:- रामजीलाल साहय सन् १९५४'बंधन मुक्त' उपन्यास लिखा लेकिन हिंदी दलित साहित्य का पहला ठीक-ठाक उपन्यास सन् १९९४ में जयप्रकाश कर्दम द्वारा लिखित 'छप्पर', करुणा है। 'छप्पर' उपन्यास में भूख एवं स्थानांतरण की

समस्या पर प्रकाश डाला गया हे। मोहनदास नैमिशराय का 'महामानव बाबासाहब आंबेडकर' इस उपन्यास के अबतक अठराह संस्करण निकले हैं। इनके ओर चर्चित उपन्यास मुक्ति पर्व, झलकारीबाई, क्या मुझे खरीदोगे, आज बाजार बंद है आदि है। मुल्कराज आनंद ने 'अछूत' उपन्यास लिखा है यह महत्वपूर्ण उपन्यास है। वैसे ही मदन दीक्षित ने 'मोरी की ईंट' रुपनारायण सोनकर का 'गटर का आदमी', प्रेम कापडिया का 'मिट्टी की सौगंध' महत्वपूर्ण उपन्यास है।

कहानी:- हिंदी की पहली दलित कहानी ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'पच्चीस-चौका डढ सौ' में शिक्षा एवं ज्ञान की परंपरा में हमेशा पिछडे समाज को अनपढ बनाए रखने की चेष्टा दिखाई देती है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'सलाम' कहानी में दलित समाज का युवक विवाह के बाद अपनी नवविाहिता पत्नी के साथ जो गांव के बडे लोग है ब्रम्हण, ठाकुर उन्हें सलामी करने से माना करता है। भारतीय समाज में परंपरा यह दलितों को दबाए रखने वाली है। सुशिला टकभौरे की 'सिलाया' कहानी में सामजिक बंधन विवाह को सलिया की नायिका नकारती है। मोहनदास नैमिशराय इनकी कहानी 'अपना गाँव' में दलितों में मुक्ति संघर्ष, स्वभिमान और आत्मविश्वास जगाने की भाव भूमि तैयार करती है। 'नौ-बार' कहानी में जयप्रकाश कर्दम गैर दलित परिवार की लडकी से दलित परिवार का लडका प्यार करते है। विवाह करना चाहते हैं उस लडकी के परिवार वाले लडका दलित है इसलिए इन्कार करते हैं। हम आज भले ही प्रगतिशील होने का दम भरते हो बावजूद समाज आज वहीं ठहरा है जहाँ से चला था। हिंदी दलित कहानियों के मुख्य विषय ज्ञान के शिक्षण संस्थान, जाति के सवाल, आरक्षण, सत्ता में भागेदारी की माँग आदि है।

नाटक:- इनमें मोहनदास नैमिशराय, सुशिला टाकभौरे, स्वामी अछुतानंदन हरीहर इनका 'सबूक मुन्नी बलिदान' यह काफी चर्चित नाटक माना राहा है। यह हिंदी का पहला दलित नाटक माना जाता है। असघोष का 'व्रज सूची' आदि महत्वपूर्ण है। स्वामी अछुतानंद ने 'रामराज्य का न्याय' और 'मायाराम' नामक नाटक लिखे। डॉ.एन.सिंह ने 'कठोती में गंगा', नंदलाल जैसवार ने 'इन्साफ' मोहनदास नैमिशराय का 'अदालतनामा' नाटक भी महत्वपूर्ण है।

आलोचना:- ओमप्रकाश वाल्मीकि का 'दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र' वैसे ही एच. एल. दुसाने, सुर्यनारायण रणसुभे, टी.व्हि. कटीमनी, तेजसिंग, वाहरु सोनवणे, कंवल भारती, गुरुप्रसाद मदन आदि आलोचना एवं विचारधारा को लेकर काम कर रहे हैं। डॉ. श्यौराज सिंह बेचैन की पुस्तक 'सामाजिक न्याय और दलित साहित्य' इसमें महत्वपूर्ण है। पत्रिकाओं में बयान, हंस, वार्गथ दलित साहित्य की समीक्षा प्रकाशित करती है।

शोध की संभावनाएँ:-

१. दलित आंदोलन एवं दलित साहित्य का अंर्तसंबंध
२. दलित साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि
३. दलित साहित्य में आंबेडकर दर्शन
४. हिंदी दलित साहित्य और मराठी दलित साहित्य का अंर्तसंबंध
५. दलित साहित्य में मानवतावाद
६. सभी प्राथमिक विधाओं को लेकर प्रवृत्तिगत अध्ययन की संभावना है।
७. सभी विधाओं को लेकर मराठी और हिंदी साहित्य में तुलनात्मक अनुसंधान की संभावना है।
८. दलित साहित्य की समीक्षा में शोध की संभावना है।

समाजिक उपादेयता:-

दलित साहित्य मानवीय संवेदना से जुड़ा साहित्य है। दलित साहित्य सामजिक सम्मान और स्वाभिमान के लिए लिखा गया है। दलित साहित्य भारतीय गँवों का दस्तावेज है। दलित लेखक को सबसे अधिक त्रस्त किया तो वह भूख की समस्या है। दलित कविता अंलकार, छंद की अपेक्षा मानवीय संवेदनाओं से जुड़ा साहित्य है। दलित साहित्य समता, बंधुता, करूणा के आधार पर रचा गया है। दलित कविता समाजिक व्यवस्था पर सवाल करती है। उसके केंद्र में सामाजिक अत्याचार है। दलित साहित्य शिक्षा, संगठन और संघर्ष का एहसास दिलाती है। साथ ही दलित समाज की स्थिति, सामाजिक विषमता, छुआ-छूत समाज के सामने लाने का महत्वपूर्ण कार्य करती है। समाज व्यवस्था में परिवर्तन

लाना मुख्य उद्देश है। नव समाज निर्मिति का प्रयत्न करती है। दलित साहित्य 'आह' से उपजा साहित्य होने के कारण अपने सामज की मुक्ति के लिए लिखा गया साहित्य है। पहली पीढी के दलित लेखको ने दलितों के प्राथमिक सवाल वर्ण, जाति व्यवस्था, ज्ञान में हिस्सेदारी , पाणी, भूख आदि को लेकर साहित्य लिखा। समाजिक उपादेयाता में दलित साहित्य मानव मुक्ति के लिए लिखा गया साहित्य हे। भारतीय समाज को यदि समझना हो तो दलित साहित्य को समझना होगा। दलित साहित्य ने हिंदी साहित्य को जीवंतता प्रदान की है। संक्षेप में दलित साहित्य भारत का सामाजिक इतिहास है। दलित साहित्य ने पहली बार धर्म की आलोचना की है। दलित विमर्श जाति प्रथा को निस्सार घोषित किया। "यदि कुल मिलाकर दलित साहित्य विमर्श पर चर्चा करते समय समाजिक, राजनीतिक एवं साहित्यिक संदर्भ तलाशें जाये , तो सभी का मूल स्वर मुख्य धारा से अलग रहने की छटपटाहट अभिव्यक्ति करता है.."[१२] दलित विमर्श की सफलता पर यदि बात करे तो आज दलित साहित्य को कितना बडा बाजार उपलब्ध है। दलित लेखको को छापने के लिए बडे-गडे प्रकाशक बडी तत्परता से तैयार है।

संदर्भ सूची

१. ओमप्रकाश वाल्मीकि - दलित साहित्य का सौदर्यशास्त्र पृष्ट क्र. १६
२. बाबूराव बागूल - दलित साहित्य आज का क्रांति विज्ञान,पृष्ट क्र २५९
३. कंवल भारती -युध्दरत आम आदमी, अंक -४१-४२,१९९८ पृष्ट१४ दलित साहित्य का सौदर्यशास्त्र,-ओमप्रकाश वाल्मीकि पृष्ट क्र. १३
४. दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र पृष्ट क्र. ३१
५. डॉ.श्यौराज सिंह बेचैन-एक अलग रास्ता है दलित कथा का अंगुत्तर,जुलाई -अगस्त -सितम्बर १९९७,पृष्ट-७० ,दलित साहित्य का सौदर्यशास्त्र, ओमप्रकाश वाल्मीकि पृष्ट क्र १५
६. डॉ सूर्यनारायण रणसुभे - आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास पृ. २४३
७. डॉ सूर्यनारायण रणसुभे - आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास पृ २४९
८. डॉ सूर्यनारायण रणसुभे - आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास पृ. २३५
९. डॉ सूर्यनारायण रणसुभे - आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास पृ २४९
१०. डॉ सूर्यनारायण रणसुभे - आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास पृ. २४१-४२
११. कालीचरण स्नेही - पुस्तकवर्ता - जनवरी-फरवरी २०१२ पृ.३१
१२. प्रीति सागर - पुस्तकवर्ता - जनवरी-फरवरी २०१२ पृ ३३
१३. साहित्य में दलित विमर्श- डॉ. उषा त्यागी ऑन लाईन www.swatantaawaz.com /1/usha_tyagi.htm